दिनांक :- 11-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डा० फ़ारूक़ आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- दस

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- डॉ० सनयात सेन

डॉ० सेन ने अपने आजीविका सिद्धांत को दो भागों में बाँटा और उनके अनुसार इन्हीं दोनों मार्गों के अनुसरण करने से चीन में खाद्य-समस्या सुलझाई नहीं जा सकती थी। पहला मार्ग भूमि के समान वितरण की थी। इस के बिना वहाँ खाद्य-समस्या सुलझाई जा सकती थी। उनका कहना था कि चीन की समस्या उत्पादन की है

न कि वितरण की उन्होंने बतलाया कि चीन की जनता निर्धनता से पीड़ित है इन के असमान वितरण का प्रश्न बाद में आता है। इसलिए सबसे आगे विदेशी पूंजीपतियों के जाल को काटने के लिए कहा।

इन्हीं उपयुक्त तीनों सिद्धान्तों पर डॉ० सेन ने अपने कुओमिनतांग दल का गठन किया। उनके इस विचार के चलते चीन में उन्हें एक महान् दूरदर्शी और निर्माता के रूप में देखा गया है। उन्होंने चीन में एक नवीन युग को जन्म दिया। जिस समय चीन में लोग निर्माता के रूप में देखा गया है उन्होंने जिस समय चीन में लोग किंकर्तव्यविमूढ़ थे, डॉ० सेन के तीन सिद्धांतों ने उन्हें सुप्रेरित किया। उन्हें इनमें एक नया दर्शन मिला। उनमें नवजागरण आया और एक नवीन चीन का निर्माण हुआ।

कुओमिंतांग सरकार के कार्य :- प्रारंभ से ही कुओ

मिनतांग दल ने राष्ट्रीय एकता का बल दिया था किंतु इस समय राष्ट्रीय एकता खतरे में पड़ गई थी कारण यह था कि कुओमिनतांग दल में दो तरह की विचारधारा के लोग थे कुछ लोग राष्ट्रीय एकता कायम करने के लिए मजदूरों और किसानों का सहयोग प्राप्त करना चाहते थे। डॉ० सेन इसके समर्थक थे किंतु कैंटन के पूंजीपति इसे अपने हित में अच्छा नहीं समझते थे। अतः वे अपने सन्निहित हितों की रक्षा के लिए एक अलग स्वयं सेवक दल का निर्माण किया। विदेशों से अस्त्र-शस्त्र माँग कर वे अपनी सेना को दृढ़ करने लगे। राष्ट्रीय एकता के मार्ग से इससे बड़ा बाधक गला और क्या हो सकता था।

राष्ट्रीय एकता को दृष्टिकोण में रखते हुए डॉ०

Scanned with CamScanner

सेन में पूँजीपति के विरुद्ध कार्रवाई करने का निश्चय कर लिया। केन्द्रीय सेना के सामने कैंटन के व्यापारियों की एक न चली। उनकी स्वंय सेवक सेना (Merchants Volunteer Corps) नष्ट कर दी गई और उनके अस्त्र-शस्त्रों पर कुओमिनतांग सरकार का अधिकार हो गया। पूँजीपति के विरुद्ध सैनिक कार्रवाई करने से डॉ० सेन की लोकप्रियता से कोई आँच नहीं आई।

राष्ट्रीय एकता के मार्ग में पीकिंग का सूबेदार वू पेई फू भी बड़ा बाधक था। उसने पीकिंग पर अधिकार कर लिया था। डॉ० सेन इस प्रकार की व्यवस्था करना चाहते थे कि समान आधार पर पीकिंग और कैंटन की सरकारें संयुक्त हो जाएँ और देश में राष्ट्रीय एकता कायम हो जाए। उनका विचार था कि वू पेई फू के विरुद्ध अन्य सूबेदारों जैसे - युआन, चांग और

फेंग के साथ समझौता करके इस इस प्रकार की व्यवस्था स्थापित की जा सकती है तुआन चांग और फेंग ने इस प्रकार के समझौते के लिए वार्ता करने को डॉ० सेन को पीकिंग आमंत्रित किया। दिसम्बर 1950 को वे पीकिंग पहुँचे। वहाँ पहुँचने पर उन्हें पता लगा कि उनके पहुँचने के पूर्व ही सभी महत्वपूर्ण निर्णय ले लिए गए थे। इससे उन्हें काफी दुःख हुआ। निरंतर अवस्थता के कारण पीकिंग में ही 12 मार्च 1925 को इनका देहान्त हो गया। डॉ० सेन के निधन के बाद दल के नेतृत्व के लिए एक विवादपूर्ण प्रश्न उठ खड़ा हुआ। डॉ० सेन के जीवन-काल में ही कुओमिनतांग में दो दल बन गए थे। प्रथम वामपंथी था दल में साम्यवादी सदस्यों का समर्थन प्राप्त होने से उसकी स्थिति

अधिक मजबूत थी। दल की केन्द्रीय कार्यकारी पर इसका पूर्ण नियंत्रण था। वांग चिंगवी इस दल का नेता था। इस समय वह कैंटन की सरकार का प्रधान था। एक दूसरा दक्षिणपंथी दल था जो बढ़ते हुए साम्यवादी प्रभाव की चिंता की दृष्टि से देखता था। इस से सम्बंध में हुई वार्षिक महासभा के अधिवेशन में वामपंथियों के कार्यक्रम को विचार-विमर्श से रोक देने के परिणामस्वरूप दोनों दलों के बीच मत भेद ने उग्र रूप धारण कर लिया। कैंटन सरकार को औपचारिक रूप से राष्ट्रवादी सरकार घोषित कर दिया गया। इसका अध्यक्ष कुओमिनतांग सेना का सेनापति च्यांग काई शेक था।

च्यांग काई शेक का जन्म चिकियांग प्रांत के केंगुआ जिला में चिको नामक ग्राम में 1888 में हुआ था।

Scanned with CamScanner

उसके बचपन से ही उसके पिता का देहान्त हो गया उसकी माता एक निष्ठावान बौद्धधर्म की अनुयायी थी। कैंटन में स्थापित सैनिक विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की। डॉ० सनयात सेन के क्रांतिकारी विचारों से च्यांग बड़ा प्रभावित हुआ और वह उनका कट्टर अनुयायी बन गया। 1911 में चीनी क्रांति के समय च्यांग सेना में भर्ती हो गया। शंघाई युद्ध में उनकी बड़ी वीरता प्रदर्शित की जिसमें डॉ० सेन भी प्रभावित हुआ। जब 1913 में युवान शिकाई द्वारा कुओमिनतांग दल को अवैधानिक घोषित कर दिया गया था तब वह डॉ० सेन के साथ गया और देश निर्वासन की अवधि में निरन्तर उनके साथ रहा। 1916 में युआन के निधन के पश्चात् च्यांग देश लौट आया और व्यापार करने लगा।